छत्तीगढ़ अंचल की प्राचीन प्रतिमाओं का केश अलंकरण

- लेखक : ललित शर्मा
- तारीख : May 27, 2019

छत्तीसगढ़ अंचल के पुरास्मारकों की प्रतिमाओं में विभिन्न तरह के केश अलंकरण दिखाई देते हैं। मंदिरों की भित्तियों में स्थापित प्रतिमाओं में कालखंड के अनुरुप स्त्री-पुरुष का केश अलंकरण दिखाई देता है। उत्खनन में केश संवारने के साधन प्राप्त होते हैं, जिनमें डमरु (बलौदाबाजार) से प्राप्त हाथी दांत का कंघा उल्लेखनीय है।

नदी देवी डीपाडीह सरगुजा

सौंदर्य के प्रति मानव प्राचीन काल से ही सजग रहा है, देह के अलंकरण में उसने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी एवं नख सिख से लेकर गुह्यांग तक अलंकरण करने के लिए नवोन्मेष किए। सौंदर्य वृद्धि के लिए किए गए भिन्न भिन्न अलंकरण हमें तत्कालीन प्रतिमा शिल्प में दिखाई देते हैं।

नदी देवी देऊर टिकरा मल्हार जिला बिलासपुर

> पुरुष एवं स्त्री दोनो ही सौंदर्य प्रसाधनों का प्रयोग करते दिखाई देते हैं। जिनमें केश सज्जा एवं आभुषण अलंकरण प्रमुख है। मोहन जोदड़ो से लेकर वर्तमान तक केश विन्यास की कलाकारी दिखाई देती है। आर्य सभ्यता जब अपने उत्कर्ष पर थी तब से लेकर वर्तमान तक भारतीय कवियों, चित्रकारों एवं शिल्पकारों ने केश विन्यास को प्रमुखता से प्रदर्शित किया है।

पुरुषों में स्त्रियों की तरह लम्बे केश रखने की प्रथा थी, जिसका वे भिन्न भिन्न प्रकार से अलंकरण करते थे। श्रमशु (दाढी) एवं मूंछ युक्त चेहरे भी शिल्प में दिखाई देते हैं। जिसमें छोटी दाढी एवं लम्बी दाढी का प्रचलन दिखाई देता है, लहरदार तनी हुई तलवारी मूंछे भी प्रचलन में रही है।

नारायणपुर मंदिर कसडोल छत्तीसगढ़

देवाकृतियों में छोटी एवं लच्छेदार घुंघरवाली दाढी भी दिखाई देती है। पुरुषों में कई प्रकार के केश विन्याश का प्रचलन था। खुले केश, टोपीदार जूड़ा, एवं गेंदनुमा जूड़ा प्रतिमा अलंकरण में दिखाई देता है।

स्त्रियाँ अपने केशों के प्रति सदा से सजग रही हैं, लम्बे केश सौंदर्य के प्रतिमान माने जाते थे। उन्हें भिन्न प्रकार से जूड़े में गूंथ कर पुष्पादि एवं चिमटियो से अलंकृत किया जाता था तथा बालों के बिठाकर विभिन्न आकृतियां प्रदान करने के लिए मैन (मोम), गोंदादि के प्रयोग का भी उल्लेख मिलता है।

भांड देवल आरंग की प्रतिमा

केश प्रक्षालन के पश्चात उसे सुगंधित धुम्र से सुवासित किया जाता था, उसके बाद जूड़ा गुंथा जाता था। केश संवारने के लिए कई तरह की कंघियों का प्रयोग होता था। उत्खनन में हाथी दांत की कंघियां हमें मिलती हैं। जिन्हें अलंकृत किया जाता था। बिहारी कवि कहते ने केश सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा है कि

डमरु जिला बलौदाबाजार से उत्खनन में प्राप्त हाथी दांत का कंघा

कूच समेटि करि भुज उलटि, खए सीस पट डारि।
काको मन बाँधै न यह, जूडो बाँधनि हारि।।

समय के साथ बाल बांधने एवं जूड़े की सजावट में परिवर्तन होता रहा। सिंगारपट्टी झुमर आदि आभुषणों को बालों में गूंथ कर शिरोधार्य करने का चलन भी प्रतिमा शिल्प में दिखाई देता है।
मौर्यकाल से लेकर गुप्तकाल तक प्रतिमा शिल्प में जूड़ा बांधने का चलन दिखाई देता है। उसके पश्चात गुंथित वेणी का चलन दिखाई देने लगा एवं चोटी अधिक लोकप्रिय हो गई। कवियों ने इसे नागिन की उपमा दे डाली और नायिका सौंदर्य वर्णन में कई स्थानों पर नागिन सी लहराती वेणी का उल्लेख मिलता है...

लटकति ललित पीठ पर चोटी, बिच-बिच सुमन सँवारी।
देखे ताहि मैर सो आवत, मनहुँ भुजंगिनी कारी।।

नदी देवी सिद्धेश्वर मंदिर पलारी

उत्तर भारत की अपेक्षा दक्षिण भारत में केश विन्यास अधिक भव्य दिखाई देता है। प्रतीत होता है कि दक्षिण भारत में केश सज्जा एक कला के रुप में विकसित हुई। प्राचीनकाल में सारनाथ मथुरा सहित उत्तर भारत में अलकावलि, मयुरपंखी आदि प्रकार के केश विन्यास प्रचलित थे।

युगल प्रतिमा डीपाडीह सरगुजा

अलकावलि विधि में बालों को घुंघराले बनाकर गर्दन एवं माथे पर छोड़ दिया जाता है। मयुरपंखी में बालों को केवड़े इत्यादि के पत्रों से अलंकृत कर इस प्रकार से बांधा जाता था कि मयुर पंख का आभास होता था। अहिक्षत्र का अर्थ है सर्प का फ़न। बालों के जूड़े को शीश के मध्य इस तरह से बांधा जाता था जिससे सर्प के फ़न का भान होता था।

छत्तीसगढ़ अंचल में बस्तर से लेकर सरगुजा तक की प्रतिमाओं में भिन्न-भिन्न केश विन्यास दिखाई देता है। एक ही कालखंड में इन स्थानों पर अलग तरह का केश विन्यास है। केश विन्यास से भी क्षेत्र विशेष की पहचान दिखाई देती है तथा उस क्षेत्र विशेष के लोगों की पहचान बनाने का काम भी केश विन्यास से होता था।

युगल प्रतिमा राजीव लोचन मंदिर राजिम

इन प्रतिमा शिल्पों को देखने ज्ञात होता है कि भारतीय नारियों को केश विन्यास कला का अच्छा ज्ञान था। आप मंदिरों की भित्तियों में जड़ी हुई अप्सराओं एवं देव प्रतिमाओं के केश विन्यास पर ध्यान देंगे तो आपको सभी में भिन्नता दिखाई देगी। परन्तु काल के अनुसार केश विन्यास का चलन एक सा दिखाई देता है।

वर्तमान में भी केश विन्यास के प्रति स्त्री एवं पुरुषों दोनों में जागरुकता दिखाई देती है। समय एवं काल के अनुसार केश विन्यास एवं अलंकरण में परिवर्तन होता रहता है, परन्तु सलीके से संवारे हुए केश सौंदर्य वृद्धि करने में कोई कसर नहीं रखते।

वर्तमान धातु शिल्प बस्तर छत्तीसगढ़

स्त्री पुरुष सौंदर्य अलंकरण वृहद विषय है, इस पर जितनी चर्चा की जाए कम है। केशादि अलंकरण के प्रति सजगता आज भी समाज में दिखाई देती है, जो वर्तमान में फ़िल्मों पर आधारित है, जैसे ही कोई केश अलंकरण फ़िल्मों में दिखाई देता है, उसका अनुकरण वर्तमान में युवा करते दिखाई देते हैं।

आलेख एवं फ़ोटो

ललित शर्मा इंडोलॉजिस्ट